International Journal of Home Science 2019; 5(3): 212-213

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(3): 212-213
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 20-07-2019
Accepted: 24-08-2019

डा0 नीलमा कुँवर
प्रोफेसर विभागाध्यक्ष एवं पूर्व डीन, गृह विज्ञान विभाग, सी0एस0ए0, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

ममता यादव
शोध छात्रा, नार्थ ईस्ट टेक्निकल विश्वविद्यालय, अरूणांचल प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
डा0 नीलमा कुँवर
प्रोफेसर विभागाध्यक्ष एवं पूर्व डीन, गृह विज्ञान विभाग, सी0एस0ए0, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

छात्राओं में स्वास्थ्य एवं भोजन के प्रति प्राकृतिक रूझान

डा0 नीलमा कुँवर एवं ममता यादव

प्रस्तावना

किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण अवधि हैं यद्यपि मानव जीवन चक्र में सभी अवस्थायें महत्वपूर्ण होती है, किन्तु कुछ अवस्थायें दूसरी अवस्थाओं की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होती हैं। क्योंकि किसी अवस्था या व्यक्ति की अभिवृत्ति एवं व्यवहार पर तुरन्त प्रभाव पड़ता है। जबकि कोई अवस्था इसलिए महत्वपूर्ण होती हैं कि उसका प्रभाव जीवन पर लम्बे समय तक पड़ता रहता है। किशोरावस्था वह अवस्था हैं जिसके तुरन्त तथा लम्बे समय तक पड़ने वाले प्रभाव व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते रहते हैं कुछ अवस्थायें अपने शारीरिक प्रभावों के लिए महत्वपूर्ण होती हैं किशोरावस्था इन दोनों ही प्रभाव के लिए महत्वपूर्ण होती है। किशोरावस्था संक्रमण की एक अवस्था है इसका अर्थ यह है कि पहले के अनुभव वर्तमान जीवन पर एवं आगे आने वाले जीवन पर पूरा प्रभाव डालती हैं। संक्रमण की अवस्था में किशोर की स्थिति बहुत अस्पष्ट होती है तथा उससे जिस भूमिका की अपेक्षायें की जाती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

- स्वास्थ्य का पूर्ण परीक्षण।
- स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं का ज्ञान।
- स्वास्थ्य निरीक्षण तथा निर्देशन।
- विभिन्न प्रकार के रोगों (कुपोषण व संक्रामण) से बचाव की जानकारी देना।
- स्वास्थ्य अभिवृत्तियों का विकास करना।

अध्ययन पद्धति

यह अध्ययन कानपुर जिले में किया गया है तथा कानपुर जिले के 6 महाविद्यालय की स्नातक और परास्नातक छात्राओं का चयन किया गया हैं कुल 300 छात्राओं को चयनित कॉलेजों से लिया गया है। जिसमें 150 स्नातक स्तर की तथा 150 परास्नातक की छात्राओं को चयनित किया गया है, इस अध्ययन के छात्राओं चयनित की गयी है, इस अध्ययन में चर और अचर को लिया गया हैं तथा सांख्यिकी टूल्स, प्रतिशत, काई वर्ग को लगाया गया है।

परिणाम

तालिका 1: स्नातक आवृत्ति, परास्नातक आवृत्ति, पूर्णप्रतिदर्श आवृत्ति, प्रतिशत

पद सं0	उत्तर	स्नातक आवृत्ति	प्रतिशत	परास्नातक आवृत्ति	प्रतिशत	पूर्णप्रतिदर्श आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	130	86.67	142	94.67	272	90.67
2	नही	20	13.33	8	5.33	28	9.33

काई स्क्वायर = 5.66 P > .05 df = 1

प्राप्त परिणामों का विवरण –उपरोक्त तालिका को देखकर ज्ञात होता है कि प्राप्त तालिका कि डिफी हैं (df) 1 है तथा आकडों का काई स्क्वायर 5.66 हैं चूंकि .05 स्तर पर डिफी 1 की X^2 का मान 3.841 होता हैं। जो कि प्राप्त मान से कम है अतः उपकल्पना अस्वीकार्य है। उपर्युक्त तालिका को देखकर ज्ञात होता हैं कि स्नातक स्तर की छात्राओं की संख्या (130) की तुलना में परास्नातक स्तर की छात्राओं की संख्या (142) अधिक हैं अत. हम कह सकते है कि स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का

मतलब परास्नातक स्तर की छात्राओं को अधिक पता हैं। सम्पूर्ण छात्राओं की संख्या के आधार पर कुछ छात्राएँ ऐसी भी हैं जिनको स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का मतलब नहीं पता है उनका प्रतिशत (9.33) बहुत कम हैं।

तालिका नं0 2 दूसरों को स्वस्थ्य रहने की सलाह से सम्बन्धित

पद सं0	उत्तर	स्नातक आवृत्ति	प्रतिशत	परास्नातक आवृत्ति	प्रतिशत	पूर्णप्रतिदर्श आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	143	95.33	145	96.67	288	96
2	नही	7	4.67	5	3.33	12	4

काई स्क्वायर = .34 P > .05 df = 1

प्राप्त परिणामों का विवरण –उपरोक्त तालिक को देखकर ज्ञात होता हैं कि तालिका की डिफी (df) 1 हैं तथा आंकड़ों का काई स्क्वायर (x^2) .344 हैं चूँकि .05 स्तर पर डिफी 1 की x^2 तालिक का मान 3.841 हैं जो कि प्राप्त x^2 के मान से अधिक हैं इसलिये उपकल्पना स्वीकार्य होती हैं। उपर्युक्त तालिका को देखने से पता चलता हैं कि स्नातक स्तर की छात्राओं की संख्या (143) की तुलना में परास्नातक की छात्राओं की संख्या (145) अधिक हैं अतः हम कह सकते हैं कि परास्नातक स्तर की छात्राएँ दूसरों को स्वस्थ रहने की सलाह देना अधिक पसंद करती हैं। सम्पूर्ण छात्राओं की संख्या के आधार पर उपर्युक्त तालिका को देखकर पता चलता हैं कि अधिकांश छात्रायें (96%) दूसरों को स्वस्थ रहने की सलाह देना पसन्द करती हैं किन्तु कुछ ऐसी छात्राएं हैं जो दूसरों को स्वस्थ रहने की सलाह देना पसन्द नहीं करती हैं उनका प्रतिशत (4%) हैं जो कि बहुत कम है।

तालिका नं0 3 स्वास्थ्य संस्था की गतिविधियों में बराबर हिस्सा लेने से सम्बन्धित

पद सं0	उत्तर	स्नातक आवृत्ति	प्रतिशत	परास्नातक आवृत्ति	प्रतिशत	पूर्णप्रतिदर्श आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	83	55.33	29	66	182	60.67
2	नही	67	44.67	51	34	118	39.33

काई स्क्वायर = 3.57 P > .05 df = 1

प्राप्त परिणामों का विवरण –उपरोक्त तालिका को देखकर ज्ञात होता हैं कि तालिका की डिफी (df) 1 हैं तथा आकड़ों का काई स्क्वायर 3.574 हैं चूँकि .05 स्तर पर डिफी 1 की x^2 तालिका का मान 3.841 होता हैं। जो कि प्राप्त x^2 के मान से अधिक है। अतः उपकल्पना स्वीकार्य हैं । उपर्युक्त तालिका को देखने से यह पता चलता हैं कि स्नातक स्तर की संख्या (83) परास्नातक स्तर की संख्या (99) की तुलना में कम हैं अतः हम कह सकते हैं कि अधिक स्नातक स्तर की छात्राओं की तुलना में परास्नातक की अधिक छात्राएं स्वास्थ्य संख्या की गतिविधियों में बराबर हिस्सा लेती हैं । सम्पूर्ण छात्राओं की संख्या के आधार पर उपर्युक्त तालिका को देखकर यह ज्ञात हैं कि अधिकांश छात्रायें स्वास्थ्य संस्था की गतिविधियों में बराबर हिस्सा लेती हैं जिनका प्रतिशत 60.67 हैं । कुछ छात्रायें ऐसी भी हैं । स्वास्थ्य संस्था की गतिविधियों में बराबर हिस्सा नही लेती हैं उनका प्रतिशत लगभग 40 हैं।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता हैं कि स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता–परास्नातक एवं स्नातक स्तर की छात्रायें दोनो ही अपने को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक मानती हैं, दोनों ही अपने को स्वस्थ रखने का प्रयत्न करती हैं। दोनों ही नींद के प्रति जागरूक हैं जोकि स्वस्थ रहने के लिये आवश्यक है, फिर भी स्नातक स्तर की छात्राओं की प्रतिशत 8 घण्टे की नींद स्वीकार करने में अधिक है।

सुझाव

1. प्रस्तुत शोध परास्नातक एवं स्नातक स्तर की छात्राओं पर किया गया हैं इसके अतिरिक्त शोध कार्य पूर्व किशोरावस्था, बाल्यावस्था आदि पर किया जा सकता हैं।
2. शोध कार्य ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के स्वास्थ्य एवं भोजन, पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक दृष्टिकोणों पर किया जा सकता हैं।

संदर्भ

1. डॉ0 सुधा पाण्डेय, मानव विकास, साहित्य प्रकाशन आगरा।
2. डॉ0 सविता सक्सेना एवं डॉ0 मंजू सिंह, बाल विकास, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या फैजाबाद।
3. बी0 के0 बक्शी, मातृकला एवं बाल विकास, साहित्य प्रकाशन, आगरा।